राजनीति का उदारवादी दृष्टिकोण (शेष भाग)

LIBERAL VIEW OF POLITICS (remaining part)

DATE: 21st April, 2020

DR. AKHILESH KUMAR SINGH
Dept. of Pol Sc.
K.S.M. COLLEGE, AURANGABAD (BIHAR)

(2) इसमें शांतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन एक ढोंग है। → शांतिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन एक धोखा है। समाजवादी विचारक कहते हैं कि उदारवादी राज्यों में हमेशा एक पक्षीय संघर्ष होता है पूँजीपति लोग अपने असीमित धन से निर्धनों को खरीद लिया करते हैं तथा उनके मतों से ही उन पर शासन किया करते हैं।

(3) व्यक्ति तथा समाज की अलग-अलग मान्यता - उदारवादी व्यक्ति और समाज को एक-दूसरे से अलग माना है। उदारवाद का केन्द्रीय बिन्दु व्यक्ति है। समाज का अध्ययन व्यक्ति से भिन्न रूप में किया जाता है। उदारवादियों के अनुसार राज्य एक आवश्यक बुराई है तथा समाज एवं व्यक्ति परस्पर विरोधी हैं किन्तु सच तो यह है कि व्यक्ति को किसी भी रूप में समाज से अलग नहीं किया जा सकता है।

(4) समाज तथा व्यक्ति के हितों में सामंजस्य का अभाव :— उदारवाद ने व्यक्ति को साध्य और समाज को साधन माना है। इस प्रकार उदारवाद का उद्देश्य वैयक्तिक हितों की रक्षा करना है अतः साधन और साध्य के मध्य सामंजस्य स्थापित करना कठिन हो जाता है। क्योंकि समाज को व्यक्ति के हितों के विरुद्ध मान लिया गया है।

(5) यह पूँजीपतियों के हितों की रक्षा करते हैं। →
जबकि उदारवादी लोकतंत्र का समर्थक है फिर भी पूँजीपतियों के हितों की रक्षा करते हैं। किसी भी उदारवादी लोकतंत्र में निर्धनों एवं दुर्बल वर्गों का शासन स्थापित नहीं हो सकता है अतः अमीर गरीबों

6

का मत अपने पक्ष में खरीद लेते हैं तथा शासन पर अपना अधिकार जमा लेते हैं और अपने हितों की रक्षा में लग जाते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि उदारवाद शान्तिपूर्ण प्रयासों द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाना चाहता है। तथा आवश्यकता पड़ने पर उदारवादी बल प्रयोग का भी रास्ता अपनाने को तैयार रहता है। पुलिस न्यायालय आदि इसके अपने शक्ति के रूप में होते हैं जिसका प्रयोग करने की अनुमति केवल विशेष परिस्थितियों में होती है और इस बल प्रयोग का उद्देश्य केवल अपराधी को दण्ड देना न होकर उनमें सुधार करना और उसके जीवन में परिवर्तन लाना है। अतः पुलिस, न्यायालय, जेल इत्यादि दण्ड देने वाली संस्थाएं न होकर उदारवादी राज्यों में सुधारक संस्थाएं मानी जाती हैं।

— X —